

28 जुलाई 2015

विश्व हेपैटाइटिस (यकृत-शोथ) दिवस

विश्व में लगभग 20 लाख से भी अधिक लोग 'वाइरल हेपैटाइटिस' से संक्रमित होते रहते हैं। वर्तमान में वाइरल हेपैटाइटिस का पूल विश्व में इतना विशाल हो गया है कि पूरे विश्व में प्रति वर्ष 15 लाख लोग इस बीमारी से काल का ग्रास बन जाते हैं। संभावना है कि यह संख्या इससे भी अधिक हो सकती है, क्योंकि पिछड़े और विकासशील देशों में रोग का निदान व इसकी रिपोर्टिंग इतनी व्यापक एवं प्रभावशाली नहीं है।

इस घातक महामारी से प्रभावशाली रूप से निपटने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मई 2014 को 28 जुलाई के दिन प्रति वर्ष 'विश्व हेपैटाइटिस दिवस' मनाने का निर्णय लिया। 28 जुलाई 2015 पहला विश्व हेपैटाइटिस दिवस होगा, इस लिए इस बार यह दिवस अत्यंत महत्वपूर्ण है।

किसी भी बुराई, बीमारी या कुरीति को रोकने के लिए जागरूकता सबसे पहली और सबसे प्रभावी हथियार माना जाता है। एड्स ऐसी बीमारी को जागरूकता के चलते ही इतने कम समय में इसका नियमन किया जा सका। यही विश्व हेपैटाइटिस दिवस व इस लेख का उद्देश्य है।

तक्नीकी शब्दों से परिचय :-

- लिवर----यकृत या जिगर
- इन्फेक्शन---संक्रमण
- इन्फ्लेमेशन----शोथ
- हेपैटाइटिस---यकृत शोथ
- वाइरस---विषाणु
- बैक्टीरिया---जीवाणु
- अमीबा---पेचिश पैदा करने वाला एक-कोषीय जीव
- हाट-स्पाट्स---जिस आबादी में मरीजों की संख्या (घनत्व) अधिक हो
- वाइरल-लोड----मरीज के रक्त में विषाणुओं का परिमाण

हेपैटाइटिस है क्या ?

यकृत के शोथ को हेपैटाइटिस कहते हैं। यह शोथ संक्रमण की वजह से हो सकती है या बगैर संक्रमण के।
संक्रमित यकृत शोथ :- इस शोथ का कारण (क) - अमीबा द्वारा, (ख) - जीवाणु द्वारा (ग) - विषाणु द्वारा

विश्व हेपैटाइटिस दिवस के लिए मात्र विषाणु जनित ('वाइरल हेपैटाइटिस) बी, सी, डी और ई' को ही शामिल किया गया है।

विषाणुओं द्वारा :-

विषाणु जनित यकृतशोथ को चिकित्सकों ने A,B,C,D का नाम दिया गया है। इस बीमारी की प्रारम्भिक अवस्था में मरीज को केवल कमजोरी, जल्दी थकान की ही परेशानी होती है जिसका की वह भागमभाग में ध्यान ही नहीं देता। जब रोग काफी उग्र हो जाता है तब ही पीलिया व यकृत के काम न करने के लक्षण परिलक्षित होते हैं। रोग की ऐसी बढ़ी हुई अवस्था में ही मरीज अस्पताल पहुंचता है।

वाइरल हेपैटाइटिस संक्रमित व्यक्ति के रक्त, रक्त पदार्थ, तथा शरीर के स्रावों के दूसरे व्यक्ति के शरीर में पहुँचने से फैलती हैं। जैसे एक ही सुई से कई मरीजों को इंजेक्शन लगाना, संक्रमित रक्त का ट्रांस्फ्यूजन, नशेदियों द्वारा 'इंजेक्शन शेयरिंग' व असुरक्षित यौन-संबंध इसके प्रसार के प्रमुख कारण हैं। शरीर में प्रवेश करने के बाद हेपैटाइटिस का वायरस यकृत (लिवर) को संक्रमित करता है। यकृत या जिगर शरीर की सबसे बड़ी ग्रंथि है जिसका वजन 1.25- 1.5 Kg होता है इसकी वजह से इसमें गजब का 'रिजर्व' होता है; जिससे मरीज को सालों-साल कोई व्यक्ति परेशानी नहीं महसूस होती; जबकि यह वाइरस अंदर ही अंदर यकृत का विनाश कर रहा होता है। सबसे पहले मरीज को कमजोरी, थकान, भूख कम होना आदि मामूली दिक्कतें होती हैं जिन्हें वह गंभीरता से नहीं लेता। इसके बाद पेट में पानी भरना (जलोदर या एसाइटिस), पीलिया, लिवर फेल्योर के रूप में जब यह प्रकट होता तो असाध्य हो चुका होता है। यदि मरीज स्वतः अथवा इलाज के द्वारा उस समय ठीक भी हो जाता तो कुछ समय के लिवर कैंसर से मृत्यु हो जाती है। वर्तमान में लीवर कैंसर का सबसे बड़ा कारण हेपैटाइटिस B ही है।

विषाणु जनित शोथ का निदान व उपचार बहुत ही महंगा होता है। यह उपचार भी प्रारम्भिक अवस्था में रोगमुक्ति आसान है परंतु लेट-स्टेज में यह उतना कारगर नहीं होता।

भारत में इस बीमारी की दर मात्र 0.9% है जो कि और देशों की तुलना में काफी कम है। जनसंख्या वर्तमान में लगभग एक अरब 27 करोड़ है। इस गणित से भारत में एक करोड़ चौदह लाख हेपैटाइटिस के मरीज हैं जो कि स्वयं बहुत बड़ी संख्या है। इन मरीजों का खोजना, निदान करना व इलाज करना अपने आप में एक बड़ी समस्या है। वर्तमान में एक हेपैटाइटिस के मरीज के समुचित इलाज पर एक लाख रु. का खर्च आता है।

इस प्रकार 11400000* 100000= 1140000000000 रु. खर्च आयेगा। इतनी बड़ी राशि किसी भी सरकार के लिए जुटा पाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। इसलिए ऐसी घातक और महंगे इलाज वाली बीमारी से बचाव ही इससे निपटने का सबसे अच्छा उपाय है।

बचाव के उपाय :-

- 1 - ब्लड-बैंक में हेपेटाइटिस की जांच के बाद ही मात्र असंक्रमित रक्त ही चढ़ाया जाय।
- 2 - हर मरीज को मात्र डिस्पोसेबल सिरिन्ज से ही इंजेक्शन दिये जाएँ।
- 3 - नशेड़ी 'इंजेक्शन शेयरिंग' न करें, इसकी जागरूकता के लिए पोस्टर आदि लगाए जाएँ।
- 4 - प्रत्येक प्रसव, व किसी प्रकार के आपरेशन के पहले हेपेटाइटिस की जांच होना अनिवार्य होना चाहिए।
- 5 - जागरूकता शिविरों, नुककड़-नाटक, गोष्ठियों का आयोजन होना चाहिए।
- 6 - जबतक हम झोला-छाप डाक्टरों को प्रभावी ढंग से नहीं रोक पाते, तबतक उन्हें भी इस जागरूकता अभियान में शामिल करना चाहिए।
- 7 - चिकित्सा कर्मियों के लिए कई बार हाथ धोने के लिए समुचित पानी का प्रबंध होना अत्यंत आवश्यक है।
- 8 - हेपेटाइटिस B की वैक्सीन अब उपलब्ध हो गई है, जिसे अब यूनिवर्सल इन्फ्लुएंजा प्रोग्राम में शामिल कर लिया गया है। यह हेपेटाइटिस B और उसके बाद पैदा होने वाले लीवर कैंसर से बचाव का सर्वोत्तम माध्यम है। **हेपेटाइटिस को कम्यूनिकेबल- रोग घोषित कर देना चाहिए ताकि हेपेटाइटिस का मरीज कहीं भी डायग्नोज हो उसका समुचित उपचार किया जा सके।**

विचित्र किन्तु सत्य : -

- 1 - पिछले वर्ष केवल सरकारी ब्लड-बैंक द्वारा 9 लाख रक्त-दाताओं में 4600 रक्त-दाता हेपेटाइटिस द्वारा संक्रमित पाये गये। आश्चर्य है कि इन मरीजों को संक्रमण की सूचना नहीं दी गई जिसके चलते इनका इलाज नहीं हो सका और यह सभी संक्रमित व्यक्ति इस बीमारी को फैलाने के स्रोत बने हैं।
- 2 - ब्लड-बैंक के अलावा प्राइवेट में तमाम रक्त परीक्षण की संथाओं में भी हजारों की संख्या में जांच हो रही है और लोगों में संक्रमण पाया जा रहा है परंतु शासन द्वारा उचित दिशा-निर्देश न होने से इस पर प्रभावी कार्य नहीं हो रहा है।
- 3 - ऐसा ही कुछ हाल प्रदेश के मूर्धन्य संस्था संजय गांधी पी जी आई का भी है।

अनुकरणीय :-

1- लखनऊ के बलरामपुर चिकित्सालय में जुलाई 2013 से जून 2014 तक एक अभियान के तहत अस्पताल में आए मरीजों के रिश्तेदारों का हेपैटाइटिस के लिए रक्त-परीक्षण किया गया। यह लोग अपने को पूर्णतया स्वस्थ महसूस कर रहे थे। इस अवधि में 21011 रक्त-परीक्षण में 219 B +ve, 23 लोग सी +ve, व 07 लोग ऐसे थे जो B और C दोनों +ve थे। इनमें से 145 केसेज में विषाणु परिमाण (वाइरल लोड) इतना अधिक था कि उन्हें उपचार की आवश्यकता थी। इन मरीजों का इलाज करने पर 3 मरीज बिलकुल रोगमुक्त हो गये तथा 45 लोगों में उपचार प्रभावशाली (गुड रिस्पॉस) पाया गया।

2- मेरठ में स्वैच्छिक संस्थानों द्वारा गरामीनांचल के झोला-छाप डाक्टरों को डिस्पोजेबल सिरिन्ज प्रयोग करने का महत्व बताया गया व उनकी क्लिनिक में लगाने के लिए पोस्टर भी दिये गये जिसमें लिखा था "हर इंजेक्शन नई सिरिन्ज से ही लगवाएँ" जिन झोला-छाप डाक्टरों ने यह पोस्टर लगाया उन्हें संस्था की तरफ से, प्रति हफ्ते प्रोत्साहन के रूप में 50 डिस्पोजेबल सिरिन्ज मुफ्त दी जा रहीं हैं।

3-वहीं दिल्ली में ब्लड-डोनर में हेपैटाइटिस पाये जाने पर उस व्यक्ति को पोस्टकार्ड द्वारा सूचित किया जाता है। इस पोस्टकार्ड पर उन अस्पतालों का पता दिया होता है जहां पर हेपैटाइटिस का उपचार उपलब्ध है।

विशेष :-

28 जुलाई नोबल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक सैमुयल ब्लम्बर्ग का जन्म दिन है। इसी वैज्ञानिक ने पहले आस्ट्रेलिया के आदिवासियों में हेपैटाइटिस B का पता लगाया तथा इसके बचाव का टीका या वैक्सीन का आविष्कार किया। इस वैक्सीन की वजह से हेपैटाइटिस B से बचाव व इससे होने वाले लीवर कैंसर से बचाव हो सकता है। ब्लम्बर्ग द्वारा खोज किया यह टीका कैंसर के विरुद्ध पहला टीका है। इस लिए इस महान वैज्ञानिक के सम्मान में तथा आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें याद कर सकें उनके जन्म-दिन को "विश्व हेपैटाइटिस दिवस" के रूप में अंगीकृत किया गया।
